

सतिगुरु सां मूं नेहु लगायो आ ।

लोक सुखनि जो भानु भुलायो आ ॥

सतिगुरु बादलु मुंहिजो मनुमोरु चंद्र साहिबु मनु कयुमि चकोर ।

राति दींहा तकियां कृपा कोर साह स्नेह सजायो आ ॥

रूप रसामृत प्राण प्यासी दम दम दिलिड़ी दर्द उदासी ।

करियां तवहां जी चरण खवासी उमंगु इहो मन भायो आ ॥

मुखिड़े जंहिजे मधुर हंसी आ सूरति साईं नैननि वसी आ ।

रोम रोम में छवि विलसी आ जीवनु सफल बणायो आ ॥

मधुरी मूरति नेह निमाणी सुहाग चरणनि में सुरति समाणी ।

सुधा सरस जंहिजी मिठिड़ी वाणी प्रेम जो पाटु पढ़ायो आ ॥

समुंदर वांगे गुणनि गंभीरु हिमाचल जिंय आ धर्म में धीरु ।

मन इन्द्रयूं वसि करण में वीरु नाम जो नारो वजायो आ ॥

बुद्धि विशाल ऐं अखण्ड ज्ञानी दिव्य आनंद जो दिलबरु दानी ।

पाण प्रभू पहिरे जामो इन्सानी जगत उधारण आयो आ ॥

लोक मुकुट मणि श्री मैगसि चंदा श्री सीय रघुवर पद प्रेम उमंगा ।

सतिगुरु साहिबु जन सुखकंदा श्रुति इयें फरमायो आ ॥